New Dimensions and Pattern of Geography in New Education Policy-2021
ISBN: 978-81-954010-8-6

शेखावाटी का भूगोल

सुमित मेहता
सहायक प्रोफेसर
इतिहास
राजकीय कला महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

शेखावाटी उत्तर-पूर्वी राजस्थान का एक अर्द्ध-पुष्क ऐतिहासिक क्षेत्र है। राजस्थान के वर्तमान सीकर और झुझुनू जिले शेखावाटी के नाम से जाने जाते हैं। अपने वीरों के शौर्य और बलिदान, अपनी प्रखर धार्मिकता और उत्कृष्ट जीवनशैली तथा प्रचूर कला-संभार के कारण यह क्षेत्र प्राचीनकाल से ही लोगों के आकर्षक का केन्द्र बिन्दु रहा है। इसकी ऐतिहासिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर दीर्घकाल तक सुसम्पन्न एवं सवंर्धित होती रही है।

शेखावाटी का नाम लेने मात्र से ही मन मस्तिस्क में शौर्य का संचार होता है। दान की दुन्दुभी कानों में गूंजती है और शिक्षा, साहित्य, संस्कृति तथा कला का भाव, उर्मियां उद्वेलित होने लगती हैं।

इस प्रदेश की वर्तमान भौगोलिक स्थिति से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस भू-भाग पर कभी समुद्र लहराता था, जो किन्हीं भौगोलिक कारणों से या अन्य भूगर्भीय प्रक्रियाओं के फलस्वरूप पीछे हट गया और यहां रेत का पुंज मात्र रह गया। यहां की गौरवर्णी बालुका राशि तथा उसमें मिलने वाले शंख, सीप और कोडियां इस अनुमान को दृढ़ करती है।

ISBN: 978-81-954010-8-6

ऋगवेद में मरू शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। महाकवि कालीदास ने भी मरूप्रष्टों का वर्णन रघु की दिग्विजय के प्रसंग में किया है। रामायण में इस प्रदेश को मरूकान्तार नाम से उल्लेखित किया गया है।

इस स्थान पर तीन षक्तियों का समानान्तर शासन चलता रहा है। ये शक्तियां थी - पठान, कायमखानी और शेखावत। इस क्षेत्र पर स्वतन्त्रता से पूर्व शेखावत क्षत्रियों का आसन होने के कारण इस क्षेत्र का नाम शेखावाटी प्रचलन में आया। यह क्षेत्र राजस्थान के भू-भाग में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

सीमा और क्षेत्रफल

शेखावाटी क्षेत्र जयपुर राज्य के उत्तर में 27 अंश 20 कला और 28 अंश 34 कला उत्तर अक्षांस व 74 दंश 41 कला और 76.6 कला पूर्व देषान्तर के मध्य स्थित है। पंडित शास्त्री ने उत्तरी अक्षांश 27.20 और 28.33 तथा पूर्वी रेखांश 73.40 से 76.5 तक बताया है। इसके उत्तर पश्चिम में बीकानेर राज्य, दक्षिण पश्चिम में जोधपुर राज्य, दक्षिण व दक्षिण पूर्व में जयपुर और उत्तर पूर्व में पटियाला व लोहारू राज्य के भू-भाग पड़ते थे। इस प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 13734 वर्ग किलोमीटर था जिसमें सीकर, झुझुनू, खेतड़ी, फतेहपुर, नवलगढ़, उदयपुर, लक्ष्मणगढ़ मंडावा, रामगढ़ आदि नगर विद्यमान थे। शेखावाटी का यह भू-भाग सीकरवाटी, खण्डेलावाटी आदि वाटियों में बटा हुआ था।

शेखावाटी क्षेत्र में मोटे रूप से वर्तमान झुझुनू जिले तथा सीकर जिले का भू-भाग सम्मिलित था। वर्तमान में झुझुनू जिले का क्षेत्रफल 5929 वर्ग किमी है। इसके उत्तर में चुरू जिला, पश्चिम में सीकर जिला, दक्षिण में सीकर जिला तथा पूर्व में हरियाणा राज्य के भू-भाग पड़ते हैं। सीकर जिले का क्षेत्रफल 7732 वर्ग किमी है। इस प्रकार दोनो जिलों का क्षेत्रफल 13661 वर्ग किलोमीटर होता है।

वर्तमान काल में निकटस्थ स्थानों के नाम एवं भू-भागों में परिवर्तन

ISBN: 978-81-954010-8-6

के कारण यह सीमा इस प्रकार है - उत्तर और पश्चिम में चुरू और गंगानगर जिले, दक्षिण पश्चिम में नागौर जिला, दक्षिण और पूर्व में जयपुर जिला तथा पूर्व में हरियाणा प्रान्त है।

कर्नल जेम्स टॉड ने शेखावाटी के क्षेत्रफल को 15000 किलोमीटर बताया है। जयपुर के भूगोल में शेखावाटी का विस्तार 5370 किलोमीटर बताया गया है। पंडित मधुसुदन ओझा ने मत्स्य देश के इतिहास में शेखावाटी का विस्तार 8100 किलोमीटर बताया है। इतिहासकार पण्डित रामचन्द्र भगवती दत्त शास्त्री शेखावाटी का विस्तार 8100 किलोमीटर बताते हैं। इस प्रकार शेखावाटी के क्षेत्रफल को लेकर विद्वान एक मत नहीं है।

पहाड़

शेखावाटी क्षेत्र के पूर्वी और दक्षिणी पूर्वी भाग में छोटे-छोटे पहाड़ है परन्तु पश्चिम तथा उत्तर की ओर कोई पहाड़ नहीं है केवल रेत के टीले हैं जिनमें से कुछ 100 फीट ऊंचे भी हैं। इस क्षेत्र का उत्तर पश्चिमी भाग ग्रेट इंडियन डेजर्ट में सम्मिलित है। दक्षिण में अरावली पर्वत की श्रेणी का एक सिलसिला है, जो शेखावाटी और जयपुर के बीच स्वाभाविक सीमा बनाता है। पूर्व में सिंघाना से सांभर तक फैला हुआ अरावली का मुख्य सिलसिला है।

इसकी सबसे ऊंची चोटी रघुनाथगढ़ में है, जो समुद्र की सतह से 3450 फुट ऊंची है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में उदयपुर पहाड़ समुद्र की सतह से 3000 फुट, हर्ष का पहाड़ 2998 फीट, खेतड़ी में भोपालगढ़ का पहाड़ 2377 फीट ऊंचा है। दक्षिणी-पूर्वी पर्वत श्रेणी में उदयपुर, रघुनाथगढ़, लोहार्गल, शाकम्बरी, हर्ष आदि तथा पूर्वीय पर्वत श्रेणी में सिंघाना, खेतडी व जसरापुर आदि बसे हुए हैं।

शेखावाटी सीमा पर नारनौल के समीप अवस्थित ढोसी पहाड़ भी अपनी ऊंचाई के लिए प्रसिद्ध है। कुमारिका अंतरीप से चलकर जो भूमध्य रेखा आयी है, उसके नीचे यह पहाड़ आता है। पूर्व में सिंघाना और चिड़ावा के पास नारी की पहाड़ी, बग्गड़ की पहाड़ी, नरहड़ की पहाड़ी, जय की पहाड़ी,

ISBN: 978-81-954010-8-6

मोडा पहाड़, रसोडे की पहाड़ी, मारिगसर की पहाड़ी, रिजाणी की पहाड़ी आदि हैं।

नदियां, नाले व झीलें

शेखावाटी में बारह मास प्रवाहित होने वाली एक भी नदी नहीं है। यहां बरसाती नदियां बहती है। यहां की सबसे बडी नदी काटली है। यह नदी खण्डेला के पहाड़ों से निकलकर दक्षिण से उत्तर की ओर लगभग 60 मील बहती हुई शेखावाटी की पूरी सीमा पर कर बीकानेर संभाग के चुरू जिले की राजगढ़ तहसील में पंहुच कर संाखू के पास बेरासर ग्राम के रेतीले टीलों में विलीन हो जाती है। कुछ लोग इसे कवीरासर ग्राम के टीलों में विलीन होना मानते हैं। भारी वर्षा में इसका वेग इतना प्रबल होता है कि कोई इस वेग में घुस नहीं सकता। अपने प्रवाह के वेग के कारण रास्ते में आने वाले बालू रेत के टीबों में भारी कटाव करती है जिसके कारण इसका नाम काटली पड गया।

काटली नदी के अलावा भारी वर्षा होने पर इस क्षेत्र में बहने वाली प्रमुख बरसाती नदियां शोभावती (कृष्णावती), रानोली नदी, हर्ष की नदी, कोछोर की नदी, रींगस की नदी है। इनमें से कुछ नदियां जीण माता के सेरे में गिरती हैं। कांवट के पास से भी बहने वाली एक बरसाती नदी है।

अजीतगढ़ के पास भी पहाडों से निकलने वाली धारा त्रिवेणी कहलाती है। यह इहलोक की गंगा के नाम से इस क्षेत्र में पूजी जाती है। नीम का थाना तहसील के अजमेरी नामक ग्राम से साबी अथवा साहिवी बरसाती नदी प्रवाहित होती है जो उत्तर पूर्वी दिशा में बहने के पश्चात् शेखावाटी से बाहर निकल जाती है। एक अन्य नदी बसई अरावली पर्वत की ढालों से निकलकर कुछ दूर उत्तर दिशा में बहकर, शेखावाटी के बाहर नारनौल की तरफ निकल जाती है।

सीकर तहसील के रघुनागढ़, हर्ष ओर कालाखेत के नाले है। जो 5-6 किमी बहते हैं। रघुनाथगढ़ का नाला लगभग 15 किलोमीटर प्रवाहित

ISBN: 978-81-954010-8-6

होने के पश्चात् रानोली नदी में मिल जाता है।

नीम का थाना तहसील के पीथमपुरी नामक स्थान पर एक झील है। सीकर के समीप रेवासा में नमक की झील है। पहले यहां नमक का उत्पादन होता था। परन्तु अब लोग इसकी खार को एकत्रित कर उसका उपयोग कपडे धोने में करते हैं। इसके अलावा यहां कांवटा का खारड़ा भी है। इनके अतिरिक्त इस क्षेत्र में बरसाती पानी को रोककर अजीत सांगर बांध (खेतडी), कोट का बांध (शाकम्बरी) आदि बनाये गये हैं जिनके जल से आस-पास के क्षेत्रों में सिंचाई का कार्य किया जाता है।

जलवायु व तापमान

शेखावाटी क्षेत्र की जलवायु षुश्क है। यहां की जलवायु के मुख्य लक्षण गर्मी का मौसम, कम वर्षा, कड़ी सर्दी और वातावरण की शुष्कता है। मई माह के अन्त से जुलाई माह के प्रारम्भ तक यहां गर्म हवाएं चलती हैं जिन्हें इस क्षेत्र में ‘लू‘ कहा जाता है। यहां दिन अत्यधिक गर्म होते हैं परन्तु रातें बडी सुहावनी होती है। षीत का प्रकोप 15 दिसम्बर से 15 फरवरी के मध्य अत्यधिक होता है। इस समय यहां जगह-जगह पाला पड़ता है। फागुण और चैत्र माह में यहां मौसम सुहावना होता है जब न तो यहां अधिक गर्मी पड़ती है और न ही अधिक सर्दी।

इस क्षेत्र में वर्षा कम होती है। कभी यहां बंगाल की खाड़ी से तो कभी यहां अरब सागर से आने वाली हवाओं के द्वारा वर्षा होती है। जिस वर्ष दोनो तरफ से आने वाले बादलों से वर्षा होती है उस वर्ष यहां अच्छी वर्षा होती है। कभी-कभी इस क्षेत्र में शीत ऋतु में भी वर्षा होती है। इसे यहां मावठ के नाम से पुकारा जाता है। जिस वर्ष वर्षाकाल में यहां वर्षा का अभाव रहता है उस वर्ष अकाल पड़ता है।

सीकर जिले के क्षेत्र में वार्षिक ओसत वर्षा 46.06 मिलीमीटर होती है। इसी प्रकार झुझुनू क्षेत्र में वार्षिक औसत वर्षा 44.45 मिलीमीटर है। शेखावाटी में वर्ष भर में औसत वर्षा 10 से 22 इंच तक होती है।

ISBN: 978-81-954010-8-6

शेखावाटी में मार्च से जून तक तापमान में निरन्तर वृद्धि होती है और मई व जून वर्ष के सर्वाधिक गर्म माह होते हैं। मई में औसत दैनिक अधिकतम तापमान 39.7 डिग्री से० और औसत दैनिक न्यूनतम तापमान 24.3 डिग्री से० रहता है। जून में तापमान मई की अपेक्षा अधिक होता है। जून के अंतिम दिनों में मानसून के आगमन पर तापमान में कुछ गिरावट आ जाती है। 15 नवम्बर के बाद जनवरी तक दिन व रात के तापमान में तेजी से गिरावट आती है। जनवरी सबसे अधिक ठंडा महिना होता है। इन दिनों औसत दैनिक अधिकतम तापमान 22.0 डिग्री से० व औसत दैनिक न्यूनतम तापमान 5.0 डिग्री से० रहता है। कभी-कभी यहां न्यूनतम तापमान जमाव बिन्दू से 2 या 3 डिग्री से० से नीचे चला जाता है।

सीकर में 31 मई, 1956 को सर्वोच्च तापमान 47.8 डिग्री से० तथा 28 दिसम्बर, 1950 को न्यूनतम तापमान -3.9 डिग्री से० रिकॉर्ड किया गया था। जबकि पिलानी में 9 फरवरी, 1974 को -4.0 डिग्री से० न्यूनतम व 46.9 डिग्री से० 20 जून, 1963 को अधिकतम रिकॉर्ड हुआ था।

खनिज

शेखावाटी क्षेत्र खनिज पदार्थों की द्रष्टि से बड़ा सम्पन्न व समृद्ध रहा है। यहां खेतड़ी और सिंघाना में ताम्बे की खाने हैं। यहां दो हजार वर्षो से ताम्र उद्योग चला आ रहा है। सिंधु सभ्यता के काल में यहां से तांबा विभिन्न भागों में भेजा जाता था। उन दिनों सिंघाना में तांबे के सिक्कों की टकसाल थी। मौर्य काल में भी यहां तांबे की खुदायी होती थी। अबुल फजल मे आईने अकबरी में तांबे के इस भण्डार का उल्लेख किया है। तांबे की खाने झुझुनू में मथान, कुदान, कोलिहान, अलवली और सेतुकी क्षेत्रों में तथा सीकर में दरीबा, नीम का थाना, मोढूका, बिहार, बालेसर आदि क्षेत्रों में बहुतायत में मिलती है।

खेतड़ी में चट्टानों की तहों और सिंघाना में स्फटिक (बिल्लौरी) पत्थर पाया जाता है। खेतड़ी व नीम का थाना के पास बवाई में निकल व

ISBN: 978-81-954010-8-6

कोबाल्ट की खाने हैं जो गंधक मिला ताम्बे के रूप में पत्थरों की तहों के बीच मिलता है। यह चमकीली कलई करने के काम आता है, इसे सेहटा कहते हैं। यहां पर नीला थोथा और फिटकरी भी निकलती है।

पूंख के समीप भोजगढ़ के पहाड़ में लोहा मिलता है। नोनमेटेलिक खनिज अपेटाइट, फ्लूराइट, पाइजाइट, अभ्रक आदि भी इस क्षेत्र में बहुतायत में पाये जाते हैं। इन खनिजों के अतिरिक्त रघुनाथगढ़, जसरापुर नांगल और ष्यामपुरा की खानों से इमारती पत्थर तथा मकानों की छतों पर छाने योग्य पट्टियां निकलती है। खीरोड़ में चूने का नीला पत्थर (नारनौल की किस्म का) निकलता है, जिससे सफेद और मजबूत चूना तैयार होता है। कोट सकराय के पहाड़ की चट्टानों में कीमती शिलाजीत उपलब्ध होता है। पहले कोछोर-रेवासा की झील से नमक का उत्पादन किया जाता था, जो अंग्रेजों से जयपुर की हुई सन्धि से बंद हो गया। अब खारड़े में एकत्रित खार कपडे धोने के काम में लाया जाता है।

वनस्पतियाँ

शेखावाटी में विविध प्रकार की वनस्पतियाँ उत्पन्न होती है। यहां का वन क्षेत्र लगभग 47 हजार एकड़ है। इसे मोटे तौर पर चार भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम भाग में धोक, छालेर, सालर, कूमठा, छीला के वृक्ष हैं। दूसरे भाग में प्रमुख वृक्ष नीम, थोर, दसरन और खिरने हैं। तीसरे भाग में खेर, खेजड़ा, हिंगोत आदि वृक्ष हैं। चतुर्थ भाग में बालू भरे मैदानों में पाये जाने वाले सभी पेड़-पौधे सम्मिलित किये जा सकते हैं। शेखावाटी क्षेत्र के अन्य पेड-पौधों में आक, फोग, बुई, बबूल, कीकर, बांसा, खींप, कैर, जाल, रोहिड़ा, शीशम, सिरस, बोरड़ी, गूलर, बड़, पीपल, नीम, लेसवा, सैवणा, कैकड़ा आदि हैं। कुचों से पानी प्राप्त होती है जिससे रस्सी बनायी जाती है एवं छप्पर छाए जाते हैं। इस क्षेत्र में जांटी, झाडी भी होते हैं। इनके अतिरिक्त यहां डांसर, डाक, गंगरेन, रोहीड़ा, फरास तथ सहजना के वृक्ष भी मिलते हैं। यहां चिरपोटन भी पाया जाता है। बागों में आढू, अनार, नांरगी, नींबू, खट्टा

ISBN: 978-81-954010-8-6

चकोतरा, कमरख, शरीफा, खजूर, लोकाट, पपीता, अमरूद, शहतूत, लसोड़ा, केला, अंजीर, कैमरी, चीकू, कटहल, आंवला, ढाख, आम, बील, जामुन के पेड़ और फल मिलते हैं। जंगली फल वाले वृक्षों में झड़बेडी और कैर होते हैं। इस क्षेत्र में जाल के वृक्ष भी बहुतायत से मिलते हैं।

इस क्षेत्र के जंगलों और पहाढ़ों में बोफली(कुरण्ड), अण्डोली, मूसली, थोहर, खरींटी, चित्रक, मकोय, अडूसा, खडला, गुग्गुल, सहदेवी, पुनर्नवा, धतूरा, आक आदि औशधियां प्राप्त होती है।

शेखावाटी क्षेत्र में बड़े बीहड़ झुन्झुनू, सीकर, लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर तहसीलों में हैं। इन बीहडों में भरूंट, धूब, घास, काला धामन, दूधिया, सांपला, मुनि, साटा नामक घासें होती है। इनके अतिरिक्त दूआब, बाखड़ी, मण्डूसी, आरिया आदि घास भी होती है। पखु चारण के लिए भी कुछ अन्य घासें हैं जैसे - सीब, सुखाला, जाड़ा, बेरू, लापली, जौं, गेहूँ का भूसा, बाजरा आदि भी इस भू भाग में बहुतायत से उत्पन्न होती है।

शेखावाटी में विविध प्रकार के सुंदर पुष्प उत्पन्न होते हैं। इस प्रदेश का प्रिय पुष्प रोहिड़ा है। इसका पुष्प लाल रंग का होता है जो कि निर्गन्धता लिए हुए है। फोग नामक पौधे के पुष्प धूमिल रंग के तथा बहुत छोटे-छोटे होते हैं। बांसा के फूलों का रंग गुलाबी होता है। कालिदास का प्रिय तरू शिरिश भी शेखावाटी क्षेत्र में होता है। इसके पुष्प सुगन्धयुक्त और कोमल होते हैं। पीपल और नीम के पेडों पर भी पुष्प आते हैं पर अधिक आकर्षक नहीं होते हैं।

पशु-पक्षी

शेखावाटी क्षेत्र में कोई बड़ा जंगल न होने से यहां हिंसक पशुओं का भय नहीं है। परन्तु जहां पहाड़ी स्थान हैं वहां व्याघ्र, बघेरे, जंगली सुअर, भेडिए, जरख आदि पाये जाते हैं। रेतीले मैदानों में अन्य वन्य पशुओं में लकड़बग्घा, लोमड़ी, गीदड़, खरगोश, नीलगाय, जंगली चूहा, गिलहरी, लंगूर आदि दिखलायी देते है। घरेलू पशुओं में गाय, बैल, भैंस, भेड़, बकरी,

ISBN: 978-81-954010-8-6

घोड़े, गधे, ऊँट आदि पाये जाते हैं। रेंगने वाले जीवों में कई जातिओं के जहरीले और बगैर जहरीले सांप आदि पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में बिच्छु, घेरा, गिरगिट, छिपकली, झाऊमूसा, नेवला आदि भी पाये जाते हैं।

इस क्षेत्र में सामान्य रूप से पाये जाने वाले पक्षियों में कौआ, कबूतर, कमेडी, वनकाक, चिड़िया, तोता, नीलकण्ठ, उल्लू, तीतर, गिद्ध, मैना, मोर, बतख, गौरिया, मुर्गी, बुलबुल, बाज, चील, सारस आदि हैं।

जनसंख्या

राज्य गजेटियर्स के अनुसार प्रथम नियमित जनगणना 1881 में हुई थी। इसके पश्चात् जनसंख्या प्रत्येक दस वर्ष के आंकडांे की अनुसूची में प्रदर्षित है।

शेखावाटी क्षेत्र की जनसंख्या 1891 की जनसंख्या के अनुसार 4,88,917 थी। सन् 1931 में यह जनसंख्या बढ़कर 6,01,814 हो गयी। सन् 1941 में जनसंख्या 7,33,142 तक पंहुच गयी। सन् 1971 में झुझुनू क्षेत्र की जनसंख्या 9,29,230 तथा सीकर जिले की 10,42,638 तथा दोनो क्षेत्रों की जनसंख्या 1,97,11,878 थी। आदमी का घनत्व 135 व्यक्ति प्रति वर्गमील था। सन् 1940 में सीकर राज्य की जनसंख्या 2,61,356 व खेतड़ी राज्य की जनसंख्या 1,75,260 थी।

पं. रामदीन ने राजपूताने के भूगोल में लिखा है कि सीकर ठिकाने में गांवों की संख्या 430 व आय 7 लाख प्रतिवर्ष और खेतड़ी राज्य के अन्तर्गत गांवों की संख्या 258 और आय 5 लाख प्रतिवर्ष थी।

फसल

शेखावाटी का दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र दांतारामगढ़ से लेकर नीम का थाना तक अत्यधिक उपजाऊ है। जबकि उत्तरी पश्चिमी भाग रेगिस्तानी होने के कारण अपेक्षाकृत कम उपजाऊ है। शेखावाटी के दक्षिणी-पूर्वी भाग में जल स्तर ऊंचा है और पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहां वर्षा भी अधिक होती है। शेखावाटी का उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र उपजाऊ है।

ISBN: 978-81-954010-8-6

शेखावाटी के लागों को मुख्य व्यवसाय कृषि है। प्राकृतिक विशमता होने के कारण उत्तरी-पश्चिमी भाग में खरीफ की फसल होती है और शेष भाग में खरीफ तथा रबी दोनो प्रकार की फसलें होती है।

खरीफ की फसल में मुख्यत- बाजरा, मोठ, मूंग, ज्वार, खार, चैला आदि होते हैं। रबी की फसल में गेहूँ, चना, जौ, सरसों, राई, तिल आदि होते हैं। जहां कुओं के द्वारा सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं या अन्य किसी प्रकार के सिंचाई साधन हैं वहां व्यवसायिक फसलें मूंगफली, तम्बाकू, मिर्च, धनिया, मेथी, जीरा, सौंफ, प्याज, लहसुन, मूली, गाजर, बैंगन आदि पैदा होते हैं।

फलों में अनार, नारंगी, नींबू, आम, बेर, अंगूर, अमरूद, शहतूत, इमली, लेसुवा, डांसरोली, पीलू आदि पैदा होते हैं। लोहार्गल में आम बहुतायात में होता है। शेखावाटी का मतीरा प्रसिद्ध है।

सिंचाई के साधन

शेखावाटी क्षेत्र में सिंचाई के साधन बहुत कम हैं। वर्षा के अभाव में यहां सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। सिंचाई का प्रमुख साधन कुंए है जो 35 मीटर से लेकर 60 मीटर तक गहरे हैं। कहीं-कहीं इससे भी अधिक गहरे कुंए हैं। कुओं से पीने का पानी तथा सिंचाई के लिए पानी निकालने के लिए ऊँटों का भी उपयोग किया जाता था। कुआ बनाने में अत्यधिक व्यय आने के कारण कृषकों के लिए इनका निर्माण करवाना संभव नहीं था। अतः धनिक वर्ग ने जनता की सुविधा हेतु स्थान-स्थान पर कुंए बनवाए जो आज भी अतीत की याद दिलाते हैं। आधुनिक समय में कुओं पर बिजली लग जाने से सिंचाई की सुविधाओं का विस्तार हुआ है। अधिकतर पंपिंग सैट शेखावाटी के दक्षिणी पूर्वी भाग में, जहां भूमि का जलस्तर ऊंचा है, लगे हैं। फिर भी अधिकांश किसान वर्षा व परम्परागत साधनों पर ही निर्भर रहने के लिए बाध्य है।

यहां सिंचाई के लिए पहाड़ी नदियों के जल को बांधकर बांध भी बनाये गए। इस क्षेत्र में बने प्रमुख बांध खेतडी का अजीत सागर बांध, अजीत

ISBN: 978-81-954010-8-6

समंद बांध, रेवा बांध, उदयपुरवाटी का कोट बांध, खण्डेला के निकट सलेदीपुरा का बांध, कैरपुर बांध आदि हैं। अजीत सागर बांध बनने में 86394 रूपए, अजीत समंद बांध बनने में 38000 रूपए और रेवा बांध बनने में 9429 रूपए व्यय हुए थे।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता हैं कि शेखावाटी जैसा प्राकृतिक परिवेश अन्यत्र दुर्लभ है। द्वैध स्वरूप लिए हुए इस भू-भाग में जहां एक ओर विशाल गिरिपंक्तिआं अपनी सघन वनावली लिए छाई हुई है वहीं दूसरी ओर उससे प्रतिस्पर्धा करते हुए गौरी बालू धूल के उतुंग टीले हैं। शेखावाटी क्षेत्र शीत और गर्मी की अतिशयता वाला प्रदेश है। यहां वर्षा का अभाव रहता है। कुंए, बावड़ी, बांध आदि जल स्त्रोतों से यहां रबी, खरीफ व व्यापारिक फसलें उत्पादित की जाती हैं। पशु-पक्षी, वनस्पति, खनिज आदि प्राकृतिक संसाधनों से यह प्रदेश सदैव समृद्धषाली रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अनन्त लाल मुखर्जी - जयपुर राज्य का इतिहास*
2. *एल फिन्सटन - एकाउन्ट ऑफ काबुल*
3. *देवी सिंह मण्डावाद - शार्दुल सिंह शेखावत*
4. *गौरी शंकर हीरा चन्द ओझा - राजपूताने का इतिहास*
5. *गोपाल व्यास - सीकर जिले का भूगोल*
6. *हरफूल सिंह - शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान*
7. *हरि नारायण भावन - नवीन भूगोल*
8. *झाबर मल शर्मा - सीकर का इतिहास*
9. *झाबर मल शर्मा - खेतड़ी का इतिहास*
10. *कर्नल के.सी. ब्रुक - एसियाटिक सोसायटी - खेतड़ी की खानें*
11. *नारायण सिंह - शेखावाटी का भूगोल*

ISBN: 978-81-954010-8-6

12. रघुनाथ सिंह शेखावत - शेखावाटी का सांस्कृतिक इतिहास
13. रतन लाल मिश्र - शेखावाटी का नवीन इतिहास
14. राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, सीकर
15. राजस्थान डिस्ट्रीक्ट गजेटियर, झुझुनू
16. राम स्वरूप जोशी - सीकर जिला
17. राम चन्द्र, भगवती प्रसाद शास्त्री - शेखावाटी प्रकाश
18. रामद्यीन - राजस्थान का भूगोल, भाग प्रथम
19. शेखावाटी प्रवासी - झुझुनू विशेषांक, सन् 1968
20. सौभाग्य सिंह शेखावत - शोध पत्रिका, भाग 10, अंक 3-4

.